



महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

(भा.कृ.अनु.प. - कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान कानपुर)

चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)-273165



समाचार – पत्रिका

अंक-01

जनवरी, 2021

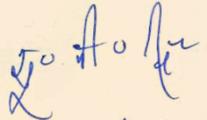
प्रो. उदय प्रताप सिंह
उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति
गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान
गोरखनाथ, गोरखपुर

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र
एक नजर में

संदेश

वर्तमान समय में कृषि उत्पादन लागत को कम करने एवं गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि कृषकों तक नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए। महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर इन नवीनतम तकनीकियों को निरंतर कृषकों तक पहुँचाने में तत्पर हैं जिससे कृषकों का आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सुधारा जा सके।

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रकाशित मासिक न्यूज लैटर का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।


(उदय प्रताप सिंह)



कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना कृषि एवं संबंधित विषयों की नवीनतम तकनीकों के स्थानांतरण एवं प्रसार द्वारा जनपद के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु गोरक्षनाथ सेवा संस्थान के नियंत्रण में गोरक्षपीठाधीश्वर पूजनीय महंत श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा की गई। इस केन्द्र का शिलान्यास 23 अक्टूबर 2016 एवं उद्घाटन 2 मार्च 2019 को तत्कालीन केंद्रीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी के द्वारा किया गया। यह केंद्र भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा वित्तपोषित है। यह केन्द्र गोरखनाथ की पवित्र धरती पर स्थापित होने की वजह से इस केंद्र का पूरा नाम महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र रखा गया। यह केन्द्र गोरखपुर जनपद से 35 किलोमीटर दूरी पर गोरखपुर – सोनौली मार्ग पर पीपीगंज रेलवे स्टेशन से 8 किलोमीटर दूरी पर (अक्षांश 26.929971, देशांतर 83.240244) पीपीगंज – बढ़या चौक मार्ग पर स्थित है। कृषि विज्ञान केन्द्र के पास 20.56 हेक्टेअर का प्रक्षेत्र है जिस पर प्रमुख रूप से गेहूँ, धान, सरसो, चना, तिल, गन्ना, अरहर इत्यादि फसलों का बीज उत्पादन किया जाता है।

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	प्रशिक्षण की सं.	लाभार्थी संख्या
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	06	145
ख) नवयुवक नवयुवतियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	1	17

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल हे०/ सं०	लाभार्थी संख्या
क) मधुमक्खी पालन प्रदर्शन	05	05
ख) चना (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन RVG 202)	10	25
ग) मसूर (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन IPL 316)	05	12
घ) सरसो (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन DRMRIJ 31, RH749)	46.66	115
ङ) जौ (RD 2907)	4.0	10
च) बरसीम हरा चारा	04	32
छ) सरसो (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, सल्फर, DRMRIJ 31, RH749)	2	14
ज) चना (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, बोरान, RVG 202)	2.5	10

3. प्रक्षेत्र परीक्षण

शीर्षक	संख्या लाभार्थी
क) गेहूँ की फसल में जीवामृत का मूल्यांकन	05
ख) पशुओं में दुग्ध उत्पादन में अजोला का मूल्यांकन	05
ग) मटर प्रजाति काशी नन्दिनी का 0.5 हेक्टेअर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
घ) मिर्च का प्रजाति काशी अनमोल का 0.5 हेक्टेअर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
ङ) चने पर फास्फोरस घोलक जीवाणु व राइजोबियम जैव उर्वरक के प्रभाव का मूल्यांकन 0.6 हे. में 3 किसानों के यहां चल रहा है	03
च) गेहूँ की नयी विमोचित प्रजाति करण वंदन (DBW 187) का मूल्यांकन	05

4. प्रसार गतिविधियां

शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
क) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	65	303
ख) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	40	78
ग) मोबाइल सलाह	160	152
घ) समाचार पत्र प्रकाशन	24	सामूहिक
ङ) अन्य कार्यक्रम	14	245

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

फसल/उद्यम का शीर्षक	प्रशिक्षण की सं.	लाभार्थी संख्या
क) कृषक एवं महिला कृषकों हेतु प्रशिक्षण	15	300
ख) प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	2	45
ग) नवयुवक नवयुवतियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	1	20

2. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल/उद्यम का शीर्षक	क्षेत्रफल है०/न०	लाभार्थी संख्या
क) केचुआ खाद (एसीना फेटीडा)	05	05
ख) सरसो (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, सल्फर, DRMRIJ 31, RH749)	02	14
ग) चना (अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, बोरान, RVG 202)	2.5	10
घ) चना (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन RVG 202) प्रदर्शन कार्यक्रम का भ्रमण	10	25
ड) सरसो (समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन DRMRIJ 31, RH749)	46.66	115
च) जौ (RD 2907) प्रदर्शन कार्यक्रम का भ्रमण	04	10
छ) बरसीम हरा चारा	04	32

3. प्रक्षेत्र परीक्षण

शीर्षक	संख्या लाभार्थी
क) गेहूं की नयी विमोचित प्रजाति करण वंदन (DBW 187) का मूल्यांकन	05
ख) मटर प्रजाति काशी नन्दिनी का 0.5 हेक्टेअर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
ग) मिर्च का प्रजाति काशी अनमोल का 0.5 हेक्टेर पर 5 किसानों के यहां चल रहा है	05
घ) चने पर फास्फोरस घोलक जीवाणु व राइजोबियम जैव उर्वरक के प्रभाव का मूल्यांकन 0.6 हे. में 3 किसानों के यहां चल रहा है	03

4. प्रसार गतिविधियां

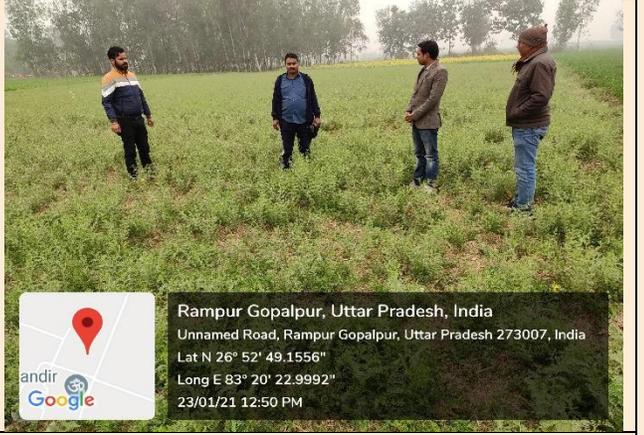
शीर्षक गतिविधियां	संख्या	लाभार्थी
क) वैज्ञानिकों का कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण	52	205
ख) कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	44	44
ग) मोबाइल सलाह	72	77
घ) समाचार पत्र प्रकाशन	46	-
ड) अन्य कार्यक्रम	19	575

समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम

❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत सरसों की फ़सल का 46.66 हे क्षेत्रफल में 115 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे सरसों की उन्नतशील प्रजाति का बीज गिरिराज (डीआरएमआर-आईजे 31) एवं आर.एच. 749 कृषको को दिया गया और साथ ही साथ इसके खेती के बारे में प्रशिक्षित किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत चना की फ़सल का 10 हे क्षेत्रफल में 25 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे चने की उन्नतशील प्रजाति RVG 202 का बीज कृषको को दिया गया और साथ ही साथ इसके खेती के बारे में प्रशिक्षित किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



❖ समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा समूहबद्ध अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत मसूर की फ़सल का 05 हे क्षेत्रफल में 12 कृषको के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे मसूर की उन्नतशील प्रजाति IPL 316 का बीज कृषको को प्रदर्शन हेतु वितरित किया गया, इसके साथ ही मसूर की उत्पादन तकनीक के बारे में प्रशिक्षित भी किया गया. वर्तमान में फ़सल अच्छी चल रही है।



- ❖ अजोला में ज्यादातर सभी आवश्यक अमीनो अम्ल, बायो पॉलीमर्स तथा बीटा केरोटीन पाए जाते हैं। इन्हीं जैव रसायनों से भरपूर होने के कारण यह पशुओं के लिये एक आदर्श जैविक पूरक आहार कहा जा सकता है। पशु, अजोला को आसानी से पचा सकते हैं, क्योंकि इसमें रेशा तथा लिग्निन कम मात्रा में पाया जाता है। अजोला को पूरक आहार के रूप में भी प्रयोग करने पर 15-20 प्रतिशत कुल दुग्ध उत्पादन बढ़ जाता है। देश के विभिन्न प्रदेशों एवं क्षेत्रों में चारे एवं पोषक तत्वों की कमी को पूर्ण करने के लिये अजोला उत्पादन को वृहद स्तर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- ❖ अजोला खाने वाले पशुओं में बाँझपन की समस्या बहुत ही कम हो जाती है पशुओं का शारीरिक विकास अच्छा रहता है जिससे पशु सुंदर और स्वस्थ दिखाई देते हैं।



- ❖ भा.कृ.अनु.प-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा आवंटित अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा जौ की फसल का 04 हे क्षेत्रफल में 10 कृषकों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन कार्यक्रम चल रहा है जिसमें जौ की उन्नतशील प्रजाति RD 2907 का बीज कृषकों को प्रदर्शन हेतु वितरित किया गया, इसके साथ ही जौ की उत्पादन तकनीक के बारे में प्रशिक्षित भी किया गया। वर्तमान में कृषक प्रक्षेत्र पर फसल अच्छी चल रही है।



❖ केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा दिनांक 01-01-2021 को राखुखोर गाँव के रामनेवास मौर्या के प्रक्षेत्र एवं दिनांक 04-01-2021 को अलामचक गाँव के कैलाश मौर्या के प्रक्षेत्र पर जीवामृत पर चल रहे प्रक्षेत्र परिक्षण का भ्रमण



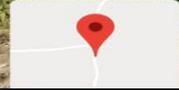
❖ दिनांक- 23/01/2021 को चने पर बोरोन का प्रभाव का प्रदर्शन डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय वि.व.वि.-मृदा विज्ञान द्वारा 04 कृषकों के 1.0 हे क्षेत्रफल में RVG 202 प्रजाति का किया गया। जिसमे बोरोन उर्वरक प्रयोग व कृषक पद्धति का चने पर प्रभाव तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया।



❖ अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत डॉ. विवेक प्रताप सिंह वि.व.वि.-पशुपालन द्वारा 32 कृषकों के 4.0 हे क्षेत्रफल में बरसीम की मस्कावी प्रजाति का प्रदर्शन किया गया है इसकी औसत हरा चारा उत्पादन 900 से 1000 क्विंटल प्रति हे. है। यह बुआई के 40-45 दिनों के बाद कटाई योग्य हो जाती है।



❖ केंद्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान, श्री अवनीश कुमार सिंह, द्वारा गेहूँ की नयी प्रजाति करण वंदन (DBW 187) का मूल्यांकन 05 कृषको के प्रक्षेत्र पर 5000 वर्ग मीटर में मूल्यांकन कार्यक्रम चल रहा है जिसमे प्रजाति की वृद्धि, विकास एवं उत्पादन क्षमता का परीक्षण किया जा रहा है।



Mustafabad, Uttar Pradesh, India
 Unnamed Road, Mustafabad, Uttar Pradesh 273209, India
 Lat N 26° 48' 13.4532"
 Long E 83° 11' 2.9976"

❖ दिनांक-05/01/2021 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र व हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड संयुक्त तत्वाधान गेहूं पर केचुआ खाद का प्रभाव का प्रदर्शन डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय वि.व.वि.-मृदा विज्ञान द्वारा 05 कृषकों के 0.6 हे क्षेत्रफल में एच. डी. 2967 प्रजाति का किया गया। जिसमें केचुआ खाद के साथ डी.ए.पी. उर्वरक की विभिन्न मात्रा का तुलनात्मक प्रदर्शन किया गया।



❖ मुस्तफाबाद, पाली, नयागांव, लोहारपुरवा, रामपुर गोपालपुर, चादबारी, तिघरा, में कृषक प्रक्षेत्र पर भ्रमण कर किसानों को सलाहकारी एवं निदानकारी सेवाएं प्रदान की गयी।



❖ श्री अवनीश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ – शस्य विज्ञान द्वारा गेहूं, चना, सरसों, जौ, मटर एवं मसूर की फसलों के 22 किसानों के प्रक्षेत्रों का भ्रमण किया गया जिसमें किसानों को फसल सम्बन्धी समसामायिक जानकारी के बारे में बताया गया



कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम

❖ कृषि विभाग, गोरखपुर द्वारा दिनांक 21-01-2021 को सहजनवा विकास खंड में आयोजित वृहद् किसान गोष्ठी एवं मेला कार्यक्रम में केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. राहुल कुमार सिंह द्वारा “कृषि बिल 2020” पर व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर सहजनवा विकास खंड के ब्लॉक प्रमुख सहित कुल 250 से अधिक किसानों ने प्रतिभाग किया।



किसान मेला एवं गोष्ठी

❖ केन्द्र के वैज्ञानिक श्री अवनीश कुमार सिंह एवं डॉ. विवेक प्रताप सिंह द्वारा 21 व 23 जनवरी 2021 को जंगल कौड़िया, रामपुर गोपालपुर, देवीपुर एवं बालापर में आयोजित किसान गोष्ठी एवं किसान मेला में समेकित कृषि प्रणाली, बकरी पालन, कृषक उत्पादन संगठन जैसे विषयों पर व्याख्यान दिया गया ।



❖ केन्द्र की गृह वैज्ञानिक श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा दिनांक - 23 जनवरी 2021 को खोराबार विकास खंड के रायगंज गाँव में “ पोषण वाटिका ”विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कराया गया ।



❖ केन्द्र की गृह वैज्ञानिक श्रीमती श्वेता सिंह द्वारा दिनांक 25 जनवरी 2021 को चरगावा ब्लाक के जंगल एकला नं. 1 व जंगल औराही गाव में “अनाजो के मूल्य संवर्धन” विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।



अभिनव पहल: महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र पर क्राप कैफेटेरिया

क्राप कैफेटेरिया प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और मूल्यांकन की प्रक्रिया में सूत्रधार की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसानों, ग्रामीण युवाओं, छात्रों और विस्तार अधिकारियों को तकनीकी ज्ञान का प्रसार करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र के तकनीकी के साथ-साथ 'कर के सिखिए और देख के विश्वास करिये' के विचारों के आधार पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है। कृषि विज्ञान केंद्र चौकमाफी के विषय वस्तु विशेषज्ञ – सस्य विज्ञान, श्री अवनीश कुमार सिंह ने क्राप कैफेटेरिया के माध्यम से कृषक समुदायों के बीच उत्पादन तकनीक के लिए गेहूं, चना, सरसों, मसूर, मक्का और जौ का मूल्यांकन और लोकप्रिय बनाने के लिए एक अभिनव पहल किया है। गेहूं की बारह किस्में (HD 3237, HD 2985, HD 3043, HD 3118, HD 3271, HD 3086, HD 2967, PBW 725, DBW 154, PBW 343, DBW 187, DBW 252), सरसों की दस किस्में (PM 30, PM 31, PM 27, PM 26, PM 25, PM 28, P. Jagarnath, P. Mahak, P. Vijay, MJ 11, मसूर की दो किस्में (L 4727, L4717), चने की नौ किस्में (Pusa 362, Pusa 3062, Pusa 3043, Pusa 372, Pusa 3022, Pusa 547, Pusa 72, RVG 202, RVG 202, मक्का की चार किस्में MM9440, MM9488, 9441, 9443, और विभिन्न प्रकार की रबी फसलें बोई गई हैं। क्राप कैफेटेरिया कृषि समुदायों और विस्तार के अधिकारियों के दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान को बदल रहा है।

गोरखपुर महोत्सव में आकर्षण का केन्द्र : महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र



फसलोत्पादन एवं प्रबंधन

गेहूँ

- ❖ बुवाई के समय के हिसाब से गेहूँ में दूसरी सिंचाई बुवाई के 40-45 दिन बाद तथा तीसरी सिंचाई 60-65 दिन की अवस्था में कर दें। चौथी सिंचाई बुवाई के 80-85 दिन बाद बाली निकलने के समय करें।
- ❖ इस माह तापमान बढ़ने के दशा में गेहूँ में बीमारियां नजर आने लगती है, जिनमें पीला रतुआ या धारीदार रतुआ, भूरा रतुआ या पत्तों का रतुआ तथा काला या तने का रतुआ रोग प्रमुख है। इन रोगों के रंगदार धब्बे पत्तों व तनों पर नजर आते हैं। बीमारी नजर आते ही अजाक्सीस्ट्रोबीन 18.2% + डाईफेनाकोनाजोल 11.4% एस.सी. 1मिली/ली. या प्रोपिकोनाजोल 1मिली/ली. पानी की दर से घोल का 2-3 छिड़काव 10-12 दिन के अंतराल पर करना चाहिए।
- ❖ गेहूँ के खेत में चूहों का प्रकोप होने पर जिंक फास्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया का प्रयोग करें।

जौ

- ❖ खेत में यदि कंडुआ रोग से ग्रस्त बाली दिखाई दे तो उसे निकाल कर जला दें।
- ❖ दुग्धावस्था में एक हल्की सिंचाई अवश्य कर दें सिंचाई तब करें जब तेज हवा न चले।

दलहनी फसलें

- ❖ चने, अरहर, मटर एवं मसूर की फसल को फली छेदक कीट का प्रकोप अधिक होता है। इस कीट की नवजात सुड़ियाँ, पत्तियों, कलियों तथा फूलों को तेजी से खाती है जबकि परिपक्व सुड़ियाँ फलियों में गोलाकार छेद बनाकर दाना खाती है। फली खाते समय सुड़ियों का आधा भाग ग्रसित फली के बाहर लटका रहा होता है जो कीट का महत्वपूर्ण लक्षण है। कलियाँ बनने से लेकर फलियाँ पकने तक इस कीट का प्रकोप अधिक होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु कीट भक्षी पक्षियों के बैठने के लिए खेत में टी (T) के आकर के डंडे (15-18/एकड़) लगाने चाहिए। फसल से कीट नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5% SG की 200-250 ग्राम दावा को 600-750 लीटर पानी में घोलकर या स्पिनोसेड 45 एस.सी. की 200 मिली दावा को 600 लीटर पानी में घोलकर या इंडोक्साकार्ब 15.8 % ई.सी. 500 मिली.दावा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़काव करना चाहिए। नियंत्रण के लिए बताई गई दवाओं में से किसी 1 दवा का छिड़काव 50 प्रतिशत फूल आने पर तथा 50 प्रतिशत फली आने पर छिड़काव करना चाहिए।

अगेती पीली सरसों

- ❖ इस माह पकने वाली है तथा माह के शुरू में हल्की सिंचाई देने से पैदावार बढ़ेगी। कीट नियंत्रण के लिए पिछले माह बताये तरीकों पर ध्यान दें। फलियाँ पीली पडने पर फसल काट लें इससे दाने बिखरते नहीं। फसल काट कर एक स्थान पर ढेर लगाकर सुखाएं तथा अच्छी तरह सुखने पर गहाई करें।

राई

- ❖ सरसों की फसल में माह कीट का प्रकोप अधिक होता है जिससे पैदावार में भारी कमी आती है। बड़ी संख्या में होने के कारण यह कीट कम समय में फसल को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। यदि आप सरसों की खेती कर रहे हैं तो माह की

पहचान, कर इससे होने वाले नुकसान से समय रहते बचाया जा सकता है। यह कीट भूरे एवं काले रंग के होते हैं। इसकी लंबाई 1 से 1.5 मिलीमीटर होती है। यह कीट सरसों के फूलों एवं कोमल फलियों का रस चूसते हैं। जिससे फूलों की संख्या में कमी आती है एवं फलियों में दाने नहीं बन पाते हैं। प्रकोप बढ़ने पर पौधों का विकास रुक जाता है। इसके रोकथाम हेतु प्रति एकड़ खेत में 5-6 पीली स्टिकी ट्रेप लगाएं। इस कीट पर नियंत्रण के लिए प्रति लीटर पानी में 1 मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड मिलाकर छिड़काव करने से इस कीट पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा 15 लीटर पानी में 12 से 15 मिलीलीटर टाटामिडा मिलाकर छिड़काव करने से भी इस कीट पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। आवश्यकता होने पर 8 से 10 दिनों के अंतराल पर दोबारा छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- ❖ फरवरी माह में लोबिया की बुआई के लिए पूसा दो फसली व पूसा फागुनि उपयुक्त फसलें हैं।
- ❖ आलू और टमाटर की फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिए मैकोजेब 1.0 किग्रा (75 प्रतिशत) प्रति हेक्टेअर 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ प्याज में प्रति हेक्टेअर नाइट्रोजन फास्फोरस पोटैश की 100 : 50 : 50 की दर से उर्वरक का प्रयोग करें।
- ❖ मटर में बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग की रोकथाम के लिए प्रति हेक्टेअर 2.0 किग्रा घुलनशील गंधक या कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम की दर से 12 – 14 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें।
- ❖ भिण्डी फसल को बोने से पूर्व बीज को 24 घंटे पानी में भिगो देना चाहिए जिससे बीज का जमाव प्रतिशत बढ़ जाता है।

बागवानी

- ❖ आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफास 1.5 मिलिलीटर या इमिडाक्लोरोप्रिड 1.0 मिलि. प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

पुष्प उत्पादन

- ❖ गर्मी के फूलों जैसे जीनिया, सनफ्लावर, पोर्चुलाका व कोचिया के बीजों को नर्सरी में बोयें।

मृदा विज्ञान

- ❖ गेहूँ की बुवाई के 60 दिन पश्चात कुल संस्तुत यूरिया की 25% मात्रा (53 किग्रा./हे. - सामान्य मृदा के लिए) का उपयोग पानी चलाने के उपरान्त जब खेत में चलने की दशा हो तब दें।

पशुपालन/दुग्ध विकास

- ❖ खुरपका-मुँहपका का टीका लगवाकर पशुओं को सुरक्षित करें। जिन पशुओं में जुलाई अगस्त में टीका लग चुका है, उन्हें फिर से टीके लगवायें।
- ❖ बाह्य परजीवी तथा अन्तः परजीवी की दवा पिलवायें।
- ❖ कृत्रिम गर्भाधान करायें। बांझपन की चिकित्सा एवं गर्भ परीक्षण करायें।
- ❖ खनिज मिश्रण एवं नमक खिलाते रहें।
- ❖ पशुओं को स्वच्छ जल उपलब्ध कराएं।
- ❖ स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हेतु पशुओं, स्वयं, वातावरण तथा बर्तनों की स्वच्छता रखें।
- ❖ अतिरिक्त लाभ के लिये कृषक करें बैकयार्ड मुर्गी पालन। यह एक ऐसा व्यवसाय है जो आय का अतिरिक्त साधन बन सकता है। यह व्यवसाय बहुत कम लागत में शुरू किया जा सकता है और इसमें मुनाफा भी काफी ज्यादा है।
- ❖ दुधारू पशुओं के लिये उनके आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें।

मौनपालन

- ❖ सरसों में फूल खिलने के दशा में प्रक्षेत्र का चयन कर, ,मौनवंशों का समय से माईग्रेशन करें

- ❖ मौनगृह के तलपट पर सम्बंधित उपकरणों को पोर्टेबिलिटी परमैगनेट/ लाल दवा से एक बार धुलाई करें।
- ❖ माइट के प्रकोप से बचने के लिए मौनगृह के तलपट की समय-समय पर सफाई करते रहें।
- ❖ अत्यधिक पुराने एवं काले पड़ चुके छत्तों को नष्ट कर दें तथा उनकी प्रतिपूर्ति मोमी छात्ताधर लगाकर नए छत्तों का निर्माण कराकर कर लिया जाए ताकि मौनवंशों की गुणवत्ता प्रभावित न हो।
- ❖ गतवर्ष की अधिक शहद उत्पादन करने वाले सशक्त मौनवंशों को मात्र मौनवंश की श्रेणी में रखते हुए इनसे मौनवंशों का संवर्धन सुनिश्चित किया जाए

सहयोग			
नाम	पदनाम	विषय	मो0न0
श्री आशीष कुमार सिंह	प्रक्षेत्र प्रबंधक	अनुवाशिकी एवं पादप प्रजनन	07752941868
श्री जितेन्द्र कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (लैब टेक्निशियन)	पौध संरक्षण	08887725608
श्री शुभम पाण्डेय	सहायक	-	08317019891
श्री संजय कुमार यादव	ड्राईवर	-	09415853387
श्री दिनेश राव	ड्राईवर	-	09695713464
श्री जयप्रकाश सिंह	स्किल्ड सपोर्टिंग स्टॉफ	-	09140533437
श्री अभिमन्यु वर्मा	स्किल्ड सपोर्टिंग स्टॉफ	-	07379390081

सह-सम्पादक मंडल			
डा0 विवेक प्रताप सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन	07651922058
डा0 अजीत कुमार श्रीवास्तव	विषय वस्तु विशेषज्ञ	उद्यान	08787264166
डा0 राहुल कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	कृषि प्रसार	07007275688
श्री अवनीश कुमार सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	09792099943
श्री संदीप प्रकाश उपाध्याय	विषय वस्तु विशेषज्ञ	मृदा विज्ञान	09621437547
श्रीमती श्वेता सिंह	विषय वस्तु विशेषज्ञ	गृह विज्ञान	09453158193

संकलन एवं सहयोग			
नाम	पदनाम	विषय	मो0न0
श्री गौरव कुमार सिंह	कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)	कम्प्यूटर	07651922058

सम्पादक			
डा0 संदीप कुमार सिंह			
(वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष)			
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर(उ०प्र०)			
Mob no. 09453721026; Email – gorakhpurkvk2@gmail.com			
website - http://www.mgkvk.in/			